राष्ट्रीय कपड़ा निगम द्वारा संचालित मिलों में श्रमिकों की भागीदारी

2629. **श्री जगदम्बी प्रसाद यादव :** क्या **वस्त्र** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि राष्ट्रीय कपड़ा निगम की 50 मिलों के संबंध में श्रमिकों की भागीदारी की अनुमति प्रदान करने के बाद 125 मिलों में से 44 मिलों ने लाभ कमाना आरम्भ कर दिया था ;

(ख) यदि हां, तो राष्ट्रीय कपड़ा निगम की सभी 125 मिलों के प्रबंध में श्रमिकों की भागीदारी की अनुमति न देने के क्या कारण है ताकि वे सभी लाभ कमा सकें, और

(ग) इस तथ्य के बावजूद कि जिन मिलों को गैर सरकारी क्षेत्र द्वारा रुग्ण मिलें समझा जाता था और जिन्हें वे घाटे का सौदा समझते थे, उन्होंने प्रबंध में श्रमिकों की भागीदारी की अनुमति प्रदान किये जाने के तुरन्त बाद से लाभ कमाना प्रारम्भ कर दिया है, सभी उद्योगों में प्रबंध में श्रमिकों की भागीदारी की अनुमति के न दिय जाने के क्या कारण हैं ?

वस्त्र मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री खुर्शीद आलम खान) : (क) और (ख) नवंबर 1985 के अंत तक 52 मिलों में कामगारों की भागीदारी शुरू की गई है। इन 52 मिलों में से 21 मिलों ने अप्रैल से सितंबर 1985 की अवधि के दौरान सकल लाभ दिखाया।

उन 33 मिलों ने भी, जिनमें कामगारों की भागीदारी शुरू की गई, उस अवधि में सकल लाभ दिखाया। प्रबन्ध में कामगारों की भागीदारी की योजना एक क्रमबद्ध ढंग से लागू की जा रही है।

(ग) सरकार ने 1983 में कामगारों की भागीदारी की एक योजना अधिसूचित की जो सभी केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के [illegible] संबंध में लागू है।

[illegible] कपड़ा निगम द्वारा उत्पादन

2927. **श्री जगदम्बी प्रसाद यादव :** क्या **वस्त्र** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि राष्ट्रीय कपड़ा निगम का उत्पादन 1982-83 में 480 करोड़ रुपये से बढ़कर 657 करोड़ रुपये हो गया है और इस वर्ष के दौरान आधे समय में यह उत्पादन 395 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है और वृद्धि दर 20 प्रतिशत है यदि हां, तो राष्ट्रीय कपड़ा निगम को प्रति माह 2 करोड़ रुपये के होने वाले घाटे के क्या कारण है ;

(ख) इस तथ्य के बावजूद इसके घाटों को पूरा न करने के क्या कारण है कि कताई क्षमता का उपयोग 70 प्रतिशत से बढ़कर 77.3 प्रतिशत हो गया है और इसकी बुनाई क्षमता 90 प्रतिशत से बढ़ाकर 98 प्रतिशत हो गई है ; और

(ग) इन तथ्यों के बावजूद अब तक कोई लाभ अर्जित न करने के क्या कारण है कि कपड़े का मूल्य 4.93 रुपये प्रति मीटर से बढ़कर 6.67 रुपये प्रति मीटर हो गया है तथा इसका निर्यात भी 13.57 करोड़ रुपये से बढ़कर 39.57 करोड़ रुपये हो गया है तथा सरकारी विभाग भी धागे और वस्त्रों की सप्लाई पर लाभ का अधिकांश भाग प्राप्त कर रहे हैं ?

वस्त्र मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री खुर्शीद आलम खान) : (क) से (ग) एन टी सी के अंतर्गत राष्ट्रीयकृत मिलों का उत्पादन मूल्य 1982-83 में 480 करोड़ रुपये से बढ़ कर 1984-85 में 657 करोड़ रुपये तथा अप्रैल सितंबर 1985 की अवधि के दौरान 391 करोड़ रुपये हो गया। वृद्धि दर लगभग 21 प्रतिशत वार्षिक रही।

1984-85 की तुलना में अप्रैल-सितम्बर 1985 की अवधि में उपयोग कताई में 70.0 प्रतिशत से बढ़कर 77.3 प्रतिशत तथा बुनाई में 73.0 प्रतिशत से बढ़कर 78.1 प्रतिशत हो गया ।